## किशोरावस्था – जीवन का सबसे कठिन काल है :–

किलपट्रिक के अनुसार

"इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"

इस कथन की पुष्टि इन तर्कों के द्वारा की जा सकती है :–

1) इस अवस्था में अपराधी प्रवृति अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है।

2) इस अवस्था में समायोजन न कर सकने के कारण मृत्यु-दर और मानसिक रोगों की संख्या अन्य अवस्थाओं की तुलना में बहुत अधिक होती है।

3) इस अवस्था में किशोर के आवेगों और संवेगों में

इतनी परिवर्तनशीलता होती है कि वह प्राय: विरोधी व्यवहार करता है जिससे उसे समझना कठिन हो जाता है।

4) इस अवस्था में किशोर के आवेगों, अपने मूल्यों, आदर्शों और संवेगों में संघर्ष का अनुभव करता है, जिसके फलस्वरूप वह अपने को कभी - कभी विविधापूर्ण स्थिति में पाता है।

5) इस अवस्था में किशोर, बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था - दोनों अवस्थाओं में रहता है। अत: उसे न तो बालक समझा जाता है और न प्रौढ़।

6) इस अवस्था में किशोर का शारीरिक विकास इतनी तीव्र गति से होता है कि उसमें क्रोध, घृणा, चिड़चिड़ापन उदासीनता आदि दुर्गुण उत्पन्न

हो जाते हैं।

7) इस अवस्था में किशोर का पारिवारिक जीवन कष्टमय होता है, क्योंकि स्वतंत्रता का इच्छुक होने पर भी उसे स्वतंत्रता नहीं मिलती, उससे बड़ों की आज्ञा मानने की आशा किया जा सकता है।

8) इस अवस्था ~~में~~ में किशोर के संवेगों, रुचियों, भावनाओं दृष्टिकोणों आदि में इतनी अधिक परिवर्तनशीलता और अस्थिरता होती है, जितनी उसमें पहले कभी नहीं थी।

9) इस अवस्था में किशोर में अनेक अप्रिय बातें होती हैं, जैसे उद्दण्डता, कठोरता, मुंहखड़पन आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति, गन्दगी और अव्यवस्था की आदतें और कल्पना में विचरण।